



भारतीय मानक ब्यूरो BUREAU OF INDIAN STANDARDS

MANAK BHAVAN, 9 BAHADUR SHAH ZAFAR MARG, NEW DELHI 110002
Phone: + 91 11 23230131, 23233375, 23239402 Extn 4253; Fax: + 91 11 23235529

“पहाड़ी क्षेत्र विकास इंजीनियरिंग तथा रॉक मैकेनिक्स के महत्व”

पर

संगोष्ठी

National Seminar

On

‘Importance of Hill Area Development Engineering & Rock Mechanics’

दिनांक Date	समय Time	स्थान Venue
20 मार्च 2017 20 March 2017	प्रातः 0930 बजे 0930 h	थोमसन रूम, सिविल इंजीनियरिंग विभाग, आई आई टी, रूड़की Thomason Room Department of Civil Engineering IIT Roorkee

पिछले दो दशकों में पहाड़ी इलाकों में शहरीकरण और विकास की गतिविधियाँ तेजी से हुई हैं। भूस्खलन की तेजी से बढ़ती घटनाओं के लिए अनियोजित विकास संबंधी गतिविधियाँ प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं। इलाके की स्थिरता बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि सुरक्षित और स्थिर क्षेत्रों में विकासात्मक योजनाएं बनाई जाएं। इस संदर्भ में, भूस्खलन जोखिम क्षेत्रीकरण तकनीक, न्यूनतम भूस्खलन खतरों वाले पहाड़ी क्षेत्रों की पहचान करने और इन क्षेत्रों में विकास योजनाओं को लागू करने में मदद करती है, जो भूस्खलन की संभावनाओं को कम करने में मददगार होंगी। इसके अलावा, भूस्खलन संभावित क्षेत्रों में, यदि भूस्खलन होता है तो जोखिम आकलन अध्ययन के हिस्से के रूप में लोगों के जीवन के जोखिम के साथ-साथ भूमि के गुणों का मूल्यांकन करने की आपेक्षा होती है।

पहाड़ों में सड़क निर्माण एवं भवन के लिए छतों के निर्माण जैसी विभिन्न प्रकार की निर्माण गतिविधियों में पहाड़ के फेस पर ढलानों को काटना शामिल होता है। मलबे और अन्य भारी सामग्री या शैल ढलान जैसी सामग्रियों के आधार पर, ढलान कटाई पैटर्न अलग-अलग होता है ताकि इसके परिणामस्वरूप बनाई गई ढलान स्थिर हो। पहाड़ों में ढलानों की कटाई स्थिर करने हेतु मानकीकरण के अनुभव आधारित सामान्य नियम मददगार होंगे।

चूँकि शहरीकरण एक सतत प्रक्रिया है, इसलिए पहाड़ी इलाकों में निर्माण गतिविधियों को धारक भित्तियों की मदद से समुचित योजना बनाने की आवश्यकता है। ढलान सामग्री की प्रकृति के आधार पर, विभिन्न प्रकार की किफायती धारक-भित्तियों का निर्माण किया जा सकता है। चूँकि प्रायः सभी प्रकार की विकास परियोजनाओं के लिए निम्न से मध्यम उंचाई की भित्तियों के निर्माण की आवश्यकता होती है, इसलिए विभिन्न प्रकार की धारक-भित्तियों के डिजाइन को मानकीकृत करने की आवश्यकता है।

इसके अलावा, चूँकि पहाड़ों में उपलब्ध पेयजल की भीषण कमी हो रही है, वर्षा जल संचयन एक और महत्वपूर्ण समस्या है जिसका इलाके की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए विस्तृत अध्ययन किया जाना है।

इन सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए, दिनांक 20 मार्च 2017 को आईआईटी, रुड़की में एक संगोष्ठी की आयोजित की जा रही है, जिसमें चयनित विशेषज्ञ पहाड़ी क्षेत्र विकास इंजीनियरिंग और शैल यांत्रिकी से संबंधित महत्वपूर्ण विषयों पर व्याख्यान देंगे। इस संगोष्ठी में महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा पहाड़ी इलाकों की समस्याओं को और अधिक अच्छे से समझने में मदद मिलेगी और साथ ही भारतीय मानक तैयार करने में भी उपयोगी होगी।

There has been a spurt in the urbanization pattern and the development activities in the hilly terrains in the past two decades. Unplanned developmental activities have been mainly responsible for the increased incidences of landslides. It is essential that developmental projects are planned in safe and stable areas in order to maintain the sustainability of the terrain. In this context, the landslide hazard zonation techniques help to identify the hill areas with minimum landslide hazards and implementing the development schemes in these areas which will help to minimize the landslide probabilities. Also, in landslide prone areas, if the landslide occurs the risk to human life and land as well as properties need to be evaluated as part of risk assessment studies.

Various types of construction activities in hills such as road construction and terraces for building construction involve cut slopes on the hill face. Depending upon the type of materials, such as debris and other overburden materials or rock slopes, the cut slope pattern varies so that the resultant cut slope is stable. Standardization covering simple thumb rules will help in arriving at stable cut slopes in the hills.

Since the urbanization is an ongoing process, the construction activities in the hilly terrain need to be suitably planned with the help of retaining walls. Depending upon the nature of the slope materials, different types of retaining walls can be constructed economically. Since low to medium height of walls are often required for all types of development projects, there is a need to standardize the design of various types of retaining walls.

Moreover, since there is an acute shortage of available potable water in the hills, rainwater harvesting is another important problem to be studied in detail taking into account the terrain characteristics.

Considering all these aspects, a Seminar is being planned in IIT, Roorkee on 20 March 2017, in which identified experts will deliver lectures on important topics related to Hill area Development Engineering & Rock Mechanics. The discussions in the Seminar on important topics will help to further understand the problems of the hilly terrains and at the same time will be useful in the formulation of Indian Standards.

किसे भाग लेना चाहिये :

यह संगोष्ठी कंसल्टेंट्स, इंजीनियरों, वैज्ञानिकों, सरकारी निकायों, अनुसंधान संस्थानों और अन्य पहाड़ी क्षेत्र विकास इंजीनियरिंग और शैल यांत्रिकी के क्षेत्र में काम करने वालों के लिए है।

Who Should Attend:

The Seminar is targeted at Consultants, Engineers, Scientists, Government bodies, Research Institutions and others working in the field of hill area development engineering and rock mechanics.

पंजीकरण कैसे करें

निम्नलिखित विवरण के साथ ई-मेल करें:- manoj@bis.org.in भारतीय मानक ब्यूरो (सिविल इंजीनियरिंग विभाग), मानक भवन, 9 बहादुर शाह जफर मार्ग, नई दिल्ली - 110002 पर ।

नाम :

पदनाम :

संगठन:

फोन/मोबाईल :

ई-मेल पता :

डाक पता:

रुचि/विशेषज्ञता का क्षेत्र :

आपका ई-मेल/पत्र/फैक्स 19 मार्च 2017 तक हमें पहुंच जाना चाहिए। संगोष्ठी में भाग लेने के लिए कोई प्रतिनिधि शुल्क नहीं है। पहले आने वाले प्रतिभागियों को पंजीकरण में प्राथमिकता दी जाएगी | आयोजन स्थल की क्षमता समाप्त होते ही प्रतिभागियों का पंजीकरण बंद कर दिया जाएगा।

How to Register

Mail to : manoj@bis.org.in (Civil Engineering Department), Bureau of Indian Standards, Manak Bhawan, 9 Bahadur Shah Zafar Marg, New Delhi – 110002” with the following details :

Participant's name:

Designation:

Organization:

Phone/mobile:

Email address:

Mailing address:

Field of interest/Specialization:

Your e-mail/letter/Fax should reach us latest by 19 March 2017. There is no participation fee for attending the Seminar. Participants will be registered on first come first served basis. The registration of participants shall be closed as soon as venue hall capacity is exhausted.

सम्पर्क:

श्री मनोज कुमार रजक,

भारतीय मानक ब्यूरो

वैज्ञानिक 'C'(सिविल इंजीनियरिंग विभाग)

ई-मेल: : manoj@bis.org.in (मो.) - 9871750356

Contact:

Shri Manoj Kumar

Bureau of Indian Standards

Sc 'C' (Civil Engineering Department)

E-mail: manoj@bis.org.in (Mobile No.) 9871750356